मोक्ष

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय में चरम पुरुषार्थ है। पुरुषार्थों के मध्य यह चतुर्थस्थानीय है। धर्म, अर्थ तथा काम भौतिक पुरुषार्थ हैं और मोक्ष आध्यात्मिक पुरुषार्थ है। धर्म-अर्थ-काम व्यक्ति को सांसारिकता की ओर प्रवृत्त करते हैं और मोक्ष व्यक्ति को सांसारिकता से निवृत्त करते हैं और मोक्ष व्यक्ति सांसारिकता से निवृत्त करता है। वास्तव में त्रिवर्ग मोक्ष रूप साध्य का साधन है। हमारे दार्शनिकों एवं भक्तों ने इसी पुरुषार्थों को सर्वश्रेष्ठ और आनन्दमय माना है।

चुरादिगणीय 'मोक्षू अवसाने' धातु 'घञ्' प्रत्यय के योग से 'मोक्ष' शब्द निष्पन्न होता है। तदनुसार 'मोक्ष' के आठ नाम हैं- मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस्, निःश्रेयस्, अमृत, मोक्ष तथा अपवर्ग। अन्य कोषग्रन्थों में भी मोक्ष के अनेक अर्थ माने गए हैं- छुटकारा, स्वतन्त्रता, बचाव, मुक्ति, आवागमन (जीवन-मरण) से मुक्ति, मृत्यु, अधःपतन, बन्धन से मुक्ति आदि। पर यहाँ 'मोक्ष' उस पुरुषार्थ के रूप में गृहीत है, जो मानव-जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। "मुच्यते सर्वैर्दुःखबन्धनैर्यत्र स मोक्षः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिस पद को पाकर जीव समस्त दुःख-बन्धनों से मुक्त हो जाता है, उसे मोक्ष कहते हैं।

दार्शनिक विचार में आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक-दुःखत्रय से ऐकान्तिक (निश्चित रूप से) और आत्यन्तिक (सदा के लिए) छुटकारा पाना मोक्ष है। प्रत्येक प्राणी दुःखत्रय से दूर रहना चाहता है, फलतः यही जीवन का सरम लक्ष्य है। दार्शनिक मान्यताओं का समन्वित सारांश यह है कि मनुष्य तृष्णा (अनियन्त्रित कामनाओं) तथा रागद्वेषात्मक प्रवृत्तियों के कारण पद-पद पर विभिन्न दुःखों का अनुभव करता है और अन्त में मृत्यु का भक्ष्य बन जाता है। उसके जीवन मृत्यु का यह चक्र तब तक चलता रहता है जब तक कि उसे कामनाओं की क्षणभंगुरता एवं निस्सारता का ज्ञान नहीं हो जाता, उसका अज्ञान दूर नहीं हो जाता। मनु के अनुसार इन्द्रियनिरोध, रागद्वेषत्याग तथा प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा के

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

व्यवहार से मोक्ष सम्भव होता है। वस्तुतः अहन्ता-ममता का अज्ञान ही बन्धन है, यही भवचक्र का हेतु है और इसका त्याग मोक्ष। धन, पुत्र, कलत्र तथा अपने शरीर की अनित्यता को देखते हुए मनुष्य को विवेक का आश्रय लेना चाहिए और भूयोभूयः जन्म-मृत्यु के चक्र से बचने के लिए इसी जीवन में प्रयास करना चाहिए। सांसारिकता में निमज्जित व्यक्ति नाना प्रकार के दुःखों से दुःखी लोगों को देखकर भी मोह रूपी सुरा का पान कर चुकने के कारण प्रायः भयबीत नहीं होता, त्राण करने वाले परमपुरुषार्थ मोक्ष के लिए प्रयत्नशील नहीं होता। इसीलिए शास्त्रों में बार-बार मोक्ष प्राप्ति की ओर प्रेरित किया गया है।

मोक्ष शब्द का पुरुषार्थ रूप में अर्थ है-जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति, सांसारिक बन्धनों से छुटकारा, सब प्रकार के दुःखों से मुक्ति, परमात्मस्वरूप का ज्ञान तथा अपने को पहचानना। हलायुधकोश में श्रुतिवचन को ग्रहण करते हुए बताया गया है कि सभी आशाओं (मन की इच्छाओं) का विनाश ही मोक्ष है।

आचार्य मनु के अनुसार, जो व्यक्ति सभी प्राणियों में विद्यमान परमात्मा को आत्मा से देखता है, वह सबमें समत्व प्राप्त करके परम ब्रह्मपद को प्राप्त करता है-

एवं यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमानमात्मना।

स सर्वसमतामेत्य ब्रह्माभ्येति परं पदम्।।

महर्षि याज्ञवल्क्य का मानना है कि आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने से व्यक्ति पुनः संसार में जन्म नहीं लेता। इसके साथ ही मन, बुद्धि और स्मृति की विषयों के प्रति अनासक्ति ही मोक्ष का कारण बनती है।

सांख्यशास्त्र के अनुसार शरीरान्त के समय, प्रयोजनों के सिद्ध हो जाने पर प्रकृति की निवृत्ति हो जाने पर तत्त्वज्ञ पुरुष ऐकान्तिक तथा शाश्वत मोक्ष को प्राप्त करता है-

प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ।

ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति।।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि पापरहित, द्वैधभाव से रहित,आत्मतत्त्व का चिन्तन करने वाले, सभी प्राणियों के हित में संलग्न ऋषि परमब्रह्मरूपी निर्वाण को प्राप्त कर लेते हैं-

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।

छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।

वस्तुतः भारतीय मनीषियों ने शरीरान्त होना, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाना, परमात्मस्वरूप का साक्षात्कार करना, इन्द्रिय-संयम, काम-क्रोध, राग-द्वेष आदि को छोड़ना आदि को मोक्ष माना है। मोक्ष पुरुषार्थ की कोटि में तब आता है जब त्रिवर्ग का सेवन के पश्चात् व्यक्ति सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर, जगत् को मिथ्या समझकर परमात्मा में लीन होने लगता है।

यह पुरुषार्थ व्यक्ति को शिक्षा देता है कि सांसारिक सुखानुभूति क्षणिक है, इसकी परिणति दुःखद होती है क्योंकि व्यक्ति सुख पाने पर और अधिक पाने की अभिलाषा करता है, और सुख प्राप्ति में विघ्न होने पर दुःख ही मिलता है। यही कारण है कि महर्षि पराशर ने भी सुख के सभी सांसारिक साधनों को दुःख का हेतु माना है।

अतएव वास्तविक सुख सांसारिक सुख नहीं है, वास्तविक सुख है, मोक्षप्राप्ति और इसके निमित्त व्यक्ति को सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। हमारे दार्शनिकों ने मोक्ष पुरुषार्थ के लिए विविध दर्शनों की परिकल्पना की है और मोक्ष को आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक-त्रिविध दुःखों का विनाशक माना है।

भारतीय दार्शनिकों के विचार परस्पर भिन्न होते हुए भी इस तथ्य को एक मत से स्वीकार करते हैं को ईश्वर का साक्षात्कार ही जीव का लक्ष्य है, उसकी भक्ति की सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है, उसकी सत्ता स्वीकार करना प्रशंसनीय सांस्कृतिक निष्ठा है।

मोक्षप्राप्ति के लिए मन की एकाग्रता अत्यावश्यक है क्योंकि मन की एकाग्रता के बिना आत्मतत्त्व का साक्षात्कार असम्भव है। किन्तु मन की स्वाभाविक चञ्चलता पर नियन्त्रण पाना भी बड़ा कठिन है। मन को चञ्चलता से हटाकर एकाग्र करने के लिए अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता है। भगवान् का अभिमत है कि अभ्यास और वैराग्य से चञ्चल मन को वश में किया जा सकता है-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

मन, बुद्धि तथा स्मृति के योग से इन्द्रियों को हटाना भी मोक्ष के लिए आवश्यक है क्योंकि विषयासक्त इन्द्रियाँ सांसारिक सुख के चक्र में ही रहती हैं। ऐसी इन्द्रियों का दास मनुष्य परमात्मा के साक्षात्कार अथवा मोक्ष के विषय में तो सोच भी नहीं सकता। वस्तुतः मन को वश में करने के साथ ही इन्द्रियों को वश में करना अत्यावश्यक है क्योंकि इसके बाद ही काम को जीता जा सकता है।

मनु ने मोक्षप्राप्ति के लिए मुख्य रूप से वेदाभ्यास, तप, ज्ञान, इन्द्रिय-संयम, अहिंसा तथा गुरुसेवा इन छः कर्मों को मोक्ष का साधन माना है। अतएव मोक्षार्थी को नियमपूर्वक इन कर्मों को करना चाहिए-

वेदाभ्यासस्तपोज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः।

अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम्।।

आचार्य मनु ने उपर्युक्त छः साधनों में ज्ञान अर्थात् ब्रह्मविषयक ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ माना है क्योंकि आत्मतत्त्व का ज्ञान होते ही मनुष्य इस वास्तविकता को जान लेता है कि उसमें औ परमात्मा में कोई भेद नहीं है। फलस्वरूप वह उसकी प्राप्ति के लिए और भी प्रयत्नशील हो जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी ज्ञान को 'यज्ञ' की संज्ञा देते हुए उसे सर्वश्रेष्ठ और पवित्र माना है।

मोक्ष चाहने वाले व्यक्ति को समदर्शी भी होना चाहिए अर्थात् उसे सब व्यक्तियों को समान मानते हुए उनमें आत्मतत्त्व की सत्ता स्वीकार करे और सुख-दुःख में एक सा रहे।

अहंकार सृष्टि तथा मोह का कारण है। 'अहं' का भाव वस्तुतः भौतिक जगत् के लिए और आध्यात्मिक जगत् के लिए हानिकारक है। अतएव दोनों स्थितियों में अहंकार की निवृत्ति ही मोक्ष प्रवृत्ति का कारण बन सकती है।

महर्षि वेदव्यास के अनुसार राग-द्वेष से रहित होकर, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी और संन्यासी अपने-अपने लिए निर्धारित कर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। अतः प्रत्येक आश्रम से सम्बन्धित व्यक्ति को चाहिए कि वह नियमपूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करे।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वैराग्य भी मोक्षप्राप्ति का सर्वोत्तम एवं अनिवार्य साधन है क्योंकि वैराग्य से ही चञ्चल मन को नियन्त्रित किया जा सकता है। अतः ज्ञान की सहायता से वैराग्य प्राप्त करना चाहिए। ज्ञान द्वारा व्यक्ति जब समझ लेता है कि सांसारिक सुख क्षणभंगुर हैं, तभी उनके प्रति विरक्त हो पाता है। तत्पश्चात् उसका सम्पूर्ण ध्यान मोक्ष पर ही हो जाता है।

योग भी मोक्षप्राप्ति का साधन है। ध्यानजनित सुख सम्पन्न और ध्यानयोग में रमण करने वाले योगी दुःख और शोक से रहित होकर निर्वाण को प्राप्त करता है। योग वस्तुतः चित्तवृत्तियों का नियन्त्रण है। मन को उसकी वृत्तियों का नियन्त्रण ही व्यक्ति को सांसारिक कर्मों से मुक्ति दिलाता है।

अतः स्पष्ट है कि भगवद्भक्ति, इन्द्रिय तथा मन का संयम करना, कामनाओं का त्याग, अहंकार का त्याग, वैराग्य, वर्णाश्रम का पालन, योगसाधना आदि मोक्षप्राप्ति के साधन हैं।

मोक्षप्राप्ति के तीन आधार माने गए हैं-कर्म, ज्ञान और भक्ति। मनुष्य जब कर्म अथवा कार्य-क्रिया के मार्ग को अपनाकर मोक्ष के प्रति प्रयत्नशील होता है तब वह कर्मप्रधान मार्ग के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करना चाहता है। शास्त्रकारों ने यह माना है कि मनुष्य अपने सामाजिक और धार्मिक कर्मों का निष्ठापूर्वक सम्पादन करने के पश्चात् मोक्ष की ओर प्रवृत्त होता है। साधारणतः व्यक्ति अपने सभी दायित्वों, कर्तव्यों और कर्मों को मनोनिवेशपूर्वक करके मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होता है। अपने विभिन्न कर्तव्यों को वह बिना फल की आकांक्षा किए करता है। अतः त्याग और अनासक्ति की भावना उसमें रहती है। इसी कर्ममार्ग से उसे परमगति मोक्ष की प्राप्ति होती है। आश्रम के अन्तर्गत अपने सभी कर्म यथोचित रूप से सम्पादित करने के बाद ही व्यक्ति मोक्ष-प्राप्ति में लगता था। मनु के अनुसार तीनों ऋणों (देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण) को पूरा करके ही व्यक्ति को अपने मन को मोक्ष में लगाना चाहिए। उन ऋणों का शोधन किए बिना मोक्ष का सेवन करने वाला व्यक्ति नरकगामी होता है। मोक्षेच्छुक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक था कि वह वेदों का ज्ञान प्राप्त करे। बुद्धिजीवी और विचारशील मनुष्य ज्ञान और विचार के सन्दर्भ में ईश्वर के अव्यक्त और निराकार भाव के प्रति अपने को अनुरक्त करके ब्रह्मशक्ति से एकाकार होने का प्रयास करता है। ज्ञानी और विद्वान् व्यक्तियों का यही आधार ज्ञान-मार्ग है। सभी जीवों में

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

समानता का भाव, आत्मज्ञान की प्राप्ति और ब्रह्म के स्वरूप का अनुभव ज्ञान के अन्तर्गत आते हैं। कर्म और ज्ञान के अतिरिक्त मोक्ष प्राप्त करने के लिए निमित्त भक्तिभावना भी की जाती थी। गीता में इस विषय को लेकर विशद् चर्चा की गई है तथा भक्ति को अपेक्षाकृत श्रेयस्कर माना गया है। भक्तिमार्ग के अन्तर्गत मनुष्य ब्रह्म के सगुण रूप की परिकल्पना करके उपासना करता है और अपने को पूर्ण रूप से ब्रह्म की सेवा में समर्पित कर देता है। ब्रह्म ही जीव का सब कुछ हो जाता है-स्वामी, गुरु, माता, पिता,सखा आदि। उसके (ब्रह्म) साकार रूप की उपासना होती है तथा उस तक पहुँचने के लिए अपार भक्ति की जाती है। मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं-अभिलाषाओं को त्यागकर और फल की आशा किए बिना अपने को ईश्वर के प्रति उत्सर्ग कर देता है। ऐसी स्थिति में वह सुख-दुःख, ऊँच-नीच, अच्छा-बुरा और जन्म-मृत्यु सभी कुछ भूल जाता है। यही सच्ची भक्ति होती है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi